



INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 3; Issue 6; 2025; Page No. 250-254

Received: 04-09-2025

Accepted: 18-10-2025

Published: 20-11-2025

उत्तराखंड की भोटिया जनजाति की लोकसंस्कृति, पारंपरिक ज्ञान एवं सामुदायिक पहचान: वर्तमान संदर्भ में सातत्य और परिवर्तन

¹Yashpal Singh and ²Dr. SP Dikshit

¹Research Scholar, Department of History, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand, India

²Professor, Department of History, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand, India

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.23119808>

Corresponding Author: Yashpal Singh

सारांश

उत्तराखंड की भोटिया जनजाति हिमालयी क्षेत्र की उन समुदायों में सम्मिलित है जिनकी सांस्कृतिक पहचान प्रकृति, पारंपरिक आजीविका, मौखिक परंपराओं, स्थानीय ज्ञान और सामुदायिक संबंधों से गहराई से जुड़ी हुई है। इस समुदाय का ऐतिहासिक जीवन मौसमी प्रवास, पशुपालन, ऊनी वस्त्र निर्माण, कृषि तथा भारत-तिब्बत व्यापार से प्रभावित रहा है। वर्तमान समय में शिक्षा, संचार, पर्यटन, बाजार व्यवस्था, सरकारी योजनाओं और रोजगार के नए अवसरों ने समुदाय के जीवन में विभिन्न परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। उत्तराखंड के पिथौरागढ़, चमोली और उत्तरकाशी जिलों के उच्च हिमालयी क्षेत्रों में भोटिया समुदाय की विभिन्न उपसमुदायगत परंपराएँ देखने को मिलती हैं।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य भोटिया समुदाय की लोकसंस्कृति, पारंपरिक ज्ञान और सामुदायिक पहचान के बीच संबंधों का अध्ययन करना तथा यह समझना है कि आधुनिक परिस्थितियों में कौन-सी परंपराएँ निरंतर बनी हुई हैं और किनमें परिवर्तन दिखाई देता है। अध्ययन के लिए वर्णनात्मक एवं गुणात्मक दृष्टिकोण प्रस्तावित किया गया है। साहित्य समीक्षा, अर्ध-संरचित साक्षात्कार, स्थानीय बुजुर्गों से संवाद, सहभागी अवलोकन और मौखिक इतिहास को संभावित सूचना-स्रोत माना गया है।

मूलशब्द: भोटिया जनजाति, लोकसंस्कृति, पारंपरिक ज्ञान, सामुदायिक पहचान, मौखिक परंपरा, सांस्कृतिक सातत्य, आधुनिकीकरण, हिमालयी समाज।

1. प्रस्तावना

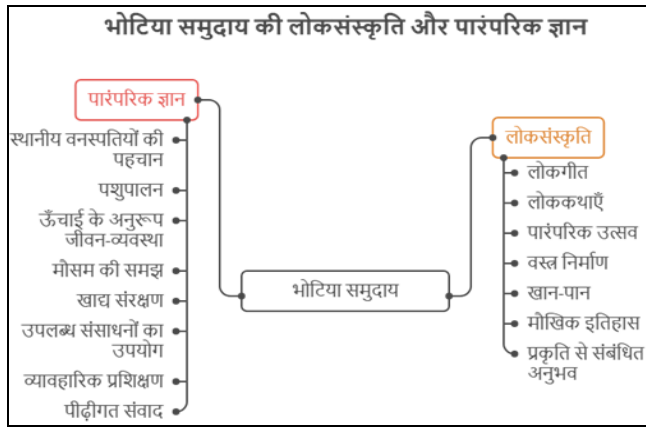
1.1 अध्ययन की पृष्ठभूमि

जनजातीय समाजों की संस्कृति केवल रीति-रिवाजों और उत्सवों का संग्रह नहीं होती, बल्कि उसमें प्रकृति के साथ संबंध, पारिवारिक संरचना, आजीविका, स्थानीय भाषा, सामूहिक स्मृति, पारंपरिक तकनीक और सामाजिक मूल्यों का समावेश होता है। इसी व्यापक परिप्रेक्ष्य में उत्तराखंड की भोटिया जनजाति का अध्ययन महत्वपूर्ण है। इस समुदाय का जीवन हिमालय की भौगोलिक परिस्थितियों, सीमावर्ती क्षेत्रों के ऐतिहासिक संपर्कों और मौसमी गतिविधियों से प्रभावित रहा है।

भोटिया समुदाय की सांस्कृतिक विविधता को समझते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि सभी उपसमुदायों की भाषा, धार्मिक प्रथाएँ, आजीविका और सामाजिक अनुभव एक जैसे नहीं हैं। पिथौरागढ़ क्षेत्र में शौका तथा दारमा, ब्यास और चौदांस घाटियों

से जुड़े समुदायों के अतिरिक्त गढ़वाल में माच्छा, तोल्छा और जाड़ जैसे समूहों का उल्लेख मिलता है। स्थानीय परंपराओं को किसी एक समान सांस्कृतिक रूप में प्रस्तुत करना इसलिए उचित नहीं होगा।

भोटिया समुदाय की लोकसंस्कृति में लोकगीत, लोककथाएँ, पारंपरिक उत्सव, वस्त्र निर्माण, खान-पान, मौखिक इतिहास और प्रकृति से संबंधित अनुभव महत्वपूर्ण अध्ययन-विषय हैं। पारंपरिक ज्ञान में स्थानीय वनस्पतियों की पहचान, पशुपालन, ऊँचाई के अनुरूप जीवन-व्यवस्था, मौसम की समझ, खाद्य संरक्षण तथा उपलब्ध संसाधनों के उपयोग से संबंधित अनुभव शामिल हो सकते हैं। इस ज्ञान का बड़ा भाग परिवारों और समुदायों के भीतर व्यावहारिक प्रशिक्षण तथा पीढ़ीगत संवाद के माध्यम से हस्तांतरित होता है।



फारुकी और नौटियाल का भोटिया पशुपालकों के पारंपरिक ज्ञान पर केंद्रित अध्ययन स्थानीय वनस्पतियों, औषधीय पौधों, पशुपालन और हस्तशिल्प संबंधी ज्ञान के महत्व को रेखांकित करता है। लेखकों ने यह भी चर्चा की कि आर्थिक अवसरों की कमी और आधुनिकीकरण के दबाव से कुछ पारंपरिक ज्ञान-प्रणालियाँ कमजोर हो सकती हैं।

समकालीन परिस्थितियों में शिक्षा, डिजिटल संचार, बाजार और रोजगार के बदलते स्वरूप समुदाय के जीवन को नए अवसरों से जोड़ते हैं। इसके साथ ही स्थानीय भाषाओं के दैनिक प्रयोग, पारंपरिक व्यवसायों, मौखिक ज्ञान और सामुदायिक गतिविधियों के स्वरूप में परिवर्तन की संभावना भी रहती है। इसलिए यह अध्ययन परंपरा को स्थिर और आधुनिकता को उसका पूर्ण विरोधी मानने के बजाय दोनों के बीच होने वाली अंतःक्रिया को समझने का प्रयास करता है।

1.2 शोध-समस्या का कथन: भोटिया समुदाय की सांस्कृतिक पहचान किन परंपराओं, ज्ञान-प्रणालियों और सामुदायिक संबंधों पर आधारित है? आधुनिक शिक्षा, आजीविका, प्रवास, संचार और बाजार के विस्तार से इन परंपराओं के संरक्षण तथा हस्तांतरण पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? क्या युवा पीढ़ी पारंपरिक ज्ञान को नए रूपों में अपना रही है, या कुछ ज्ञान-प्रथाओं से उसका संपर्क कम हो रहा है? इन प्रश्नों के व्यवस्थित अध्ययन की आवश्यकता इस शोध की मूल समस्या है।

1.3 अध्ययन के उद्देश्य

- भोटिया जनजाति की प्रमुख लोकसांस्कृतिक परंपराओं का दस्तावेजीकरण करना।
- स्थानीय पर्यावरण, पशुपालन, खाद्य परंपराओं, हस्तशिल्प और औषधीय वनस्पतियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान की प्रकृति को समझना।
- सामुदायिक पहचान के निर्माण में भाषा, लोकस्मृति, उत्सव, परिवार और सामूहिक सहभागिता की भूमिका का अध्ययन करना।
- शिक्षा, प्रवास, तकनीक, पर्यटन और रोजगार के बदलते अवसरों के साथ सांस्कृतिक प्रथाओं में होने वाले परिवर्तनों की पहचान करना।
- बुजुर्गों और युवाओं के अनुभवों की तुलना करके पीढ़ियों के बीच पारंपरिक ज्ञान के हस्तांतरण को समझना।
- समुदाय की भागीदारी पर आधारित सांस्कृतिक संरक्षण के संभावित उपाय सुझाना।

1.4 शोध-परिकल्पनाएँ

परिकल्पना 1: शिक्षा, प्रवास, आधुनिक रोजगार और संचार के

विस्तार का भोटिया समुदाय की पारंपरिक सांस्कृतिक प्रथाओं तथा उनके पीढ़ीगत हस्तांतरण से संबंध है।

परिकल्पना 2: स्थानीय भाषा, मौखिक इतिहास, सामुदायिक उत्सव और पारंपरिक आजीविका से जुड़ी गतिविधियाँ सामुदायिक पहचान के निर्माण तथा निरंतरता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। परिकल्पना 3: पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण केवल उसके दस्तावेजीकरण पर नहीं, बल्कि परिवार, समुदाय, आजीविका और स्थानीय संस्थाओं में उसके व्यावहारिक उपयोग पर भी निर्भर करता है।

2. साहित्य समीक्षा

भोटिया समुदाय की लोकसंस्कृति एवं पारंपरिक ज्ञान का अध्ययन मानवशास्त्र, समाजशास्त्र, लोकसाहित्य और पर्यावरणीय अध्ययन के अंतःविषयक दृष्टिकोण से किया जा सकता है।

हूण की पुस्तक 'लिविंग ऑन द मूवरू भोटियाज़ ऑफ द कुमाऊँ हिमालय' भोटिया समुदाय की पारंपरिक जीवन-पद्धति, मौसमी प्रवास, पशुपालन और सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों को समझने के लिए महत्वपूर्ण स्रोत है। यह अध्ययन दर्शाता है कि समुदाय की जीवन-व्यवस्था को केवल स्थायी निवास की अवधारणा से नहीं समझा जा सकता; गतिशीलता और पर्यावरण के साथ संबंध भी इसके विश्लेषण में महत्वपूर्ण हैं।

फारुकी और नौटियाल का अध्ययन पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान की उपयोगिता पर ध्यान केंद्रित करता है। इसमें स्थानीय वनस्पतियों, पशु-संसाधनों, औषधीय पौधों और हस्तशिल्प से संबंधित अनुभवों का उल्लेख मिलता है। इस दृष्टिकोण से पारंपरिक ज्ञान केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि पर्यावरण के साथ लंबे समय तक विकसित हुए व्यावहारिक अनुभव का स्रोत भी है।

चामलेगी और बिष्ट का 2024 में प्रकाशित अध्ययन मुनस्यारी क्षेत्र के भोटिया समुदाय के स्वदेशी खाद्य पदार्थों और पेय की तैयारी संबंधी परंपराओं का दस्तावेजीकरण करता है। अध्ययन में स्थानीय संसाधनों, भोजन तैयार करने की विधियों और महिलाओं के ज्ञान की भूमिका पर ध्यान दिया गया है। यह शोध लोकसंस्कृति के उन पक्षों को समझने में उपयोगी है जो घरेलू जीवन और दैनिक व्यवहार में सुरक्षित रहते हैं।

कुमार और सती का उच्चभूमि तथा निम्नभूमि के बीच अंतर्संबंधों पर अध्ययन गढ़वाल हिमालय के भोटिया समुदायों में मौसमी आवागमन के बदलते स्वरूप को समझने का आधार देता है। निति घाटी के आठ गाँवों के 292 परिवारों पर आधारित इस अध्ययन में उच्च और निम्न क्षेत्रों के बीच पारंपरिक संपर्क में परिवर्तन का विश्लेषण किया गया है। यह शोध आजीविका, निवास-पद्धति और सांस्कृतिक निरंतरता के संबंधों की पड़ताल के लिए प्रासंगिक है।

इन अध्ययनों से तीन प्रमुख विषय उभरते हैं: पर्यावरण और आजीविका का संबंध, पारंपरिक ज्ञान का सामाजिक हस्तांतरण तथा बदलती परिस्थितियों में सामुदायिक जीवन का पुनर्गठन। फिर भी प्रस्तावित शोध में लोकगीतों, लोककथाओं, भाषा, सामुदायिक स्मृति और युवा पीढ़ी की सांस्कृतिक भागीदारी को एक संयुक्त ढाँचे में समझने की आवश्यकता बनी रहती है। इस शोध का उद्देश्य इसी संबंध को व्यवस्थित रूप से तलाशना है।

3. अनुसंधान पद्धति

3.1 शोध का स्वरूप

प्रस्तावित अध्ययन वर्णनात्मक, गुणात्मक और तुलनात्मक प्रकृति का होगा। इसमें भोटिया समुदाय की सांस्कृतिक प्रथाओं का विवरण तैयार करने के साथ-साथ विभिन्न पीढ़ियों, स्थानों और आजीविका-समूहों के अनुभवों की तुलना की जाएगी। जहाँ

उपयुक्त हो, सीमित मात्रात्मक प्रश्नों का उपयोग भी किया जा सकता है।

3.2 अध्ययन क्षेत्र एवं जनसंख्या

अध्ययन क्षेत्र के रूप में पिथौरागढ़, चमोली और उत्तरकाशी जिलों

के चयनित भोटिया-बहुल गाँव प्रस्तावित हैं। अंतिम गाँवों का चयन पहुँच, समुदाय की सहमति, स्थानीय विविधता और शोध के उद्देश्यों के आधार पर किया जाएगा। अध्ययन की जनसंख्या में स्थानीय बुजुर्ग, महिलाएँ, युवा, कारीगर, पारंपरिक ज्ञानधारक तथा अन्य इच्छुक समुदाय-सदस्य शामिल किए जा सकते हैं।

तालिका 1: प्रस्तावित अध्ययन क्षेत्र एवं सांस्कृतिक विषय

जिला	संभावित अध्ययन क्षेत्र	प्रमुख अध्ययन-विषय
पिथौरागढ़	मुनस्यारी एवं चयनित उच्च हिमालयी घाटियाँ	ऊनी हस्तशिल्प, खाद्य परंपराएँ, मौखिक इतिहास
चमोली	निति एवं माणा घाटी के चयनित गाँव	मौसमी आवागमन, उत्सव, स्थानीय ज्ञान
उत्तरकाशी	जाड़ गंगा क्षेत्र के चयनित समुदाय	भाषा, स्मृति, पारंपरिक आजीविका
सभी चयनित क्षेत्र	समुदाय-आधारित स्थल	पीढ़ीगत ज्ञान हस्तांतरण एवं सामुदायिक पहचान

3.3 नमूना चयन

नमूना चयन के लिए उद्देश्यपूर्ण नमूना पद्धति अपनाई जा सकती है, ताकि ऐसे प्रतिभागियों को शामिल किया जा सके जिन्हें लोकसंस्कृति, पारंपरिक आजीविका, भाषा, हस्तशिल्प या मौखिक

इतिहास का प्रत्यक्ष अनुभव हो। विविध अनुभवों को समझने के लिए आयु, लिंग, गाँव और आजीविका के आधार पर प्रतिभागियों में विविधता रखी जाएगी।

तालिका 2: प्रस्तावित नमूना-वितरण

प्रतिभागी समूह	प्रस्तावित संख्या	चयन का आधार
बुजुर्ग एवं मौखिक इतिहास के जानकार	20	ऐतिहासिक स्मृति और परंपराओं का ज्ञान
महिलाएँ एवं पारंपरिक शिल्पकार	25	खाद्य ज्ञान, हस्तशिल्प और घरेलू परंपराएँ
युवा प्रतिभागी	25	आधुनिक शिक्षा, रोजगार और सांस्कृतिक अनुभव
स्थानीय शिक्षक, शोधकर्ता एवं सामुदायिक प्रतिनिधि	10	संस्थागत एवं सामुदायिक दृष्टिकोण
कुल	80	प्रस्तावित नमूना

3.4 आँकड़ा-संग्रह के उपकरण

अध्ययन में अर्ध-संरचित साक्षात्कार, सहभागी अवलोकन, मौखिक इतिहास, समूह-चर्चा और उपलब्ध दस्तावेजों का विश्लेषण किया जाएगा। लोकगीतों, वस्त्रों, पारंपरिक औजारों तथा सांस्कृतिक

गतिविधियों का दस्तावेजीकरण प्रतिभागियों की पूर्व सहमति से किया जाएगा। एक ही जानकारी को अलग-अलग स्रोतों से मिलान करने की प्रक्रिया अपनाई जाएगी, ताकि निष्कर्षों की विश्वसनीयता बढ़ सके।

तालिका 3: आँकड़ा-संग्रह एवं विश्लेषण की रूपरेखा

उपकरण	प्राप्त की जाने वाली जानकारी	विश्लेषण की विधि
अर्ध-संरचित साक्षात्कार	परंपराओं, आजीविका और पहचान के अनुभव	विषयगत विश्लेषण
सहभागी अवलोकन	उत्सव, शिल्प और दैनिक सांस्कृतिक व्यवहार	वर्णनात्मक क्षेत्र-टिप्पणियाँ
मौखिक इतिहास	पीढ़ीगत स्मृतियाँ और ऐतिहासिक परिवर्तन	तुलनात्मक कथात्मक विश्लेषण
समूह-चर्चा	सामुदायिक दृष्टिकोण और साझा अनुभव	प्रमुख विषयों की पहचान
दस्तावेज एवं साहित्य	ऐतिहासिक और संस्थागत संदर्भ	स्रोतों का तुलनात्मक विश्लेषण

3.5 नैतिक पक्ष एवं सीमाएँ

अध्ययन में प्रतिभागियों की सूचित सहमति, गोपनीयता और सांस्कृतिक संवेदनशीलता का ध्यान रखा जाएगा। किसी औषधीय ज्ञान, पवित्र परंपरा या समुदाय-विशेष की जानकारी को उनकी अनुमति के बिना सार्वजनिक नहीं किया जाएगा। अध्ययन की एक सीमा यह होगी कि चयनित गाँवों और प्रतिभागियों के अनुभव पूरे भोटिया समुदाय का प्रतिनिधित्व आवश्यक रूप से नहीं करेंगे। इसलिए निष्कर्षों को उनके वास्तविक भौगोलिक एवं सामाजिक संदर्भ में प्रस्तुत किया जाएगा।

4. परिणाम एवं व्याख्या

इस अध्ययन का उद्देश्य उत्तराखंड की भोटिया जनजाति की लोकसंस्कृति, पारंपरिक ज्ञान और सामुदायिक पहचान में सातत्य तथा परिवर्तन की प्रक्रियाओं को समझना है। पूर्ववर्ती भाग में वर्णित अनुसंधान पद्धति के अनुसार वास्तविक क्षेत्रीय साक्षात्कार, अवलोकन और सर्वेक्षण के माध्यम से इन पहलुओं का अध्ययन किया जाना प्रस्तावित है।

4.1 लोकसंस्कृति में सातत्य एवं परिवर्तन

लोकसंस्कृति में लोकगीत, लोककथाएँ, पारंपरिक वस्त्र, खान-पान, उत्सव, धार्मिक विश्वास और सामूहिक अनुष्ठान सम्मिलित होते हैं। ये तत्व समुदाय की ऐतिहासिक स्मृति तथा सामाजिक संबंधों को व्यक्त करते हैं। बदलती शिक्षा-व्यवस्था, रोजगार, प्रवास और संचार के साधनों के कारण इन परंपराओं के अभ्यास तथा हस्तांतरण के तरीके बदल सकते हैं।

उदाहरण के लिए, पहले किसी लोकगीत या पारंपरिक कथा का प्रसार पारिवारिक बैठकों, सामुदायिक आयोजनों और मौखिक संवाद से होता रहा हो सकता है। वर्तमान में यही सामग्री विद्यालयी कार्यक्रमों, सांस्कृतिक मंचों, अभिलेखों या डिजिटल माध्यमों के जरिए भी सुरक्षित की जा सकती है। इस प्रकार माध्यम का बदलना आवश्यक रूप से परंपरा के समाप्त होने का संकेत नहीं है; उसका सामाजिक संदर्भ और उपयोग भी देखना होगा।

तालिका 4: लोकसंस्कृति के प्रमुख तत्वों के अध्ययन का प्रारूप

सांस्कृतिक तत्व	अध्ययन के प्रमुख प्रश्न	सातत्य एवं परिवर्तन की जाँच
लोकगीत एवं लोककथाएँ	कौन इन्हें जानता और सुनाता है?	गायन, कथन और पीढ़ीगत हस्तांतरण
पारंपरिक वस्त्र एवं हस्तशिल्प	इनका उपयोग कहाँ और कैसे होता है?	घरेलू उपयोग, बाजार तथा सांस्कृतिक प्रदर्शन
त्योहार एवं अनुष्ठान	आयोजन में किनकी भागीदारी होती है?	आयोजन की विधि और सहभागिता में बदलाव
खान-पान	पारंपरिक व्यंजन कब बनाए जाते हैं?	सामग्री, विधि और अवसरों में परिवर्तन
सांस्कृतिक तत्व	अध्ययन के प्रमुख प्रश्न	सातत्य एवं परिवर्तन की जाँच

इस तालिका का उपयोग करके शोधकर्ता यह निर्धारित कर सकता है कि कौन-सी परंपराएँ दैनिक जीवन में सक्रिय हैं, कौन-सी विशेष अवसरों तक सीमित हो गई हैं और किन्हें संरक्षित करने के लिए सामुदायिक प्रयास किए जा रहे हैं। अलग-अलग गाँवों और उपसमुदायों में प्राप्त अंतर भी दर्ज किए जाने चाहिए।

4.2 पारंपरिक ज्ञान का पीढ़ीगत हस्तांतरण

पारंपरिक ज्ञान अक्सर पुस्तकों में लिखित रूप में उपलब्ध नहीं होता। वह परिवारों, कारीगरों, पशुपालकों, बुजुर्गों और स्थानीय ज्ञानधारकों के अनुभवों में निहित रहता है। पौधों की पहचान,

मौसम संबंधी संकेत, पशुओं की देखभाल, खाद्य संरक्षण, ऊनी वस्त्र निर्माण तथा स्थानीय संसाधनों के उपयोग जैसे विषय इसके संभावित उदाहरण हैं।

इस ज्ञान का हस्तांतरण केवल जानकारी सुनने से नहीं, बल्कि उसे व्यवहार में सीखने से भी होता है। यदि युवा पीढ़ी शिक्षा या रोजगार के कारण लंबे समय तक गाँव से बाहर रहती है, तो कुछ पारंपरिक गतिविधियों में उसकी भागीदारी कम हो सकती है। दूसरी ओर, डिजिटल दस्तावेजीकरण, स्थानीय प्रशिक्षण और सामुदायिक उद्यम ज्ञान को नए संदर्भों में उपयोग करने के अवसर भी प्रदान कर सकते हैं।

तालिका 5: पारंपरिक ज्ञान के हस्तांतरण के संभावित माध्यम

ज्ञान का क्षेत्र	पारंपरिक हस्तांतरण का माध्यम	वर्तमान संदर्भ में अध्ययन का प्रश्न
औषधीय वनस्पतियों का ज्ञान	बुजुर्गों एवं अनुभवी ज्ञानधारकों से सीखना	क्या युवा इस ज्ञान को सीख रहे हैं?
ऊनी हस्तशिल्प	परिवार में अभ्यास एवं प्रशिक्षण	क्या पारंपरिक कौशल आजीविका से जुड़ा हुआ है?
पशुपालन	प्रत्यक्ष अनुभव एवं पारिवारिक कार्य	क्या बदलती आजीविका से प्रशिक्षण प्रभावित होता है?
पारंपरिक भोजन	घरेलू अभ्यास एवं मौखिक निर्देश	क्या व्यंजन और तैयारी की विधियाँ जारी हैं?
लोकगीत एवं लोककथाएँ	मौखिक संवाद एवं सामुदायिक आयोजन	क्या नए माध्यम इनके प्रसार में सहायक हैं?

इन विषयों का अध्ययन करते समय पारंपरिक ज्ञान को एक समान या अपरिवर्तनीय प्रणाली नहीं माना जाना चाहिए। इसमें अनुभव के आधार पर सुधार, स्थानीय भिन्नता और नई परिस्थितियों के अनुरूप अनुकूलन संभव है। विशेष रूप से औषधीय ज्ञान के मामले में समुदाय के अनुभवों का दस्तावेजीकरण वैज्ञानिक प्रभावशीलता के प्रमाण का विकल्प नहीं है।

4.3 सामुदायिक पहचान और आधुनिक परिस्थितियाँ

सामुदायिक पहचान व्यक्ति की आत्म-पहचान, साझा इतिहास, भाषा, पारिवारिक संबंधों, स्थानीय परंपराओं और सामुदायिक

सहभागिता से निर्मित होती है। आधुनिक शिक्षा, नए रोजगार, प्रवास और डिजिटल संचार इन संबंधों को बदल सकते हैं, लेकिन उनका प्रभाव सभी व्यक्तियों पर समान नहीं होता।

कुछ लोग पारंपरिक पहचान को सांस्कृतिक आयोजनों, स्थानीय भाषा या हस्तशिल्प के माध्यम से व्यक्त कर सकते हैं; अन्य लोग शिक्षा, पेशेवर जीवन और व्यापक सामाजिक नेटवर्क के साथ अपनी पहचान के नए रूप विकसित कर सकते हैं। इन दोनों प्रक्रियाओं को विरोधाभासी मानने के बजाय यह देखना आवश्यक है कि व्यक्ति विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में अपनी पहचान को कैसे व्यक्त करते हैं।

तालिका 6: सामुदायिक पहचान के अध्ययन के संकेतक

संकेतक	प्रस्तावित मापन या प्रश्न	विश्लेषण का उद्देश्य
स्थानीय भाषा	घर, समुदाय और सार्वजनिक स्थानों में प्रयोग	भाषा और पहचान का संबंध
सामुदायिक सहभागिता	त्योहारों एवं सामूहिक गतिविधियों में भागीदारी	सामाजिक संबंधों की निरंतरता
पारंपरिक ज्ञान	सीखे गए कौशलों एवं प्रथाओं का विवरण	पीढ़ीगत हस्तांतरण
सांस्कृतिक आत्म-पहचान	अपनी संस्कृति के महत्व के बारे में विचार	पहचान की व्यक्तिगत अनुभूति
आधुनिक अवसरों से संपर्क	शिक्षा, रोजगार, प्रवास एवं डिजिटल माध्यम	बदलते सामाजिक संदर्भों का प्रभाव

इन संकेतकों के आधार पर शोधकर्ता यह समझ सकता है कि सांस्कृतिक पहचान किन परिस्थितियों में मजबूत, परिवर्तित या नए रूप में अभिव्यक्त होती है। केवल त्योहारों में भागीदारी या पारंपरिक वस्त्रों के उपयोग को संपूर्ण सामुदायिक पहचान का पर्याप्त माप नहीं माना जाना चाहिए।

4.4 अध्ययन की वैचारिक रूपरेखा

नीचे दिया गया चित्र इस शोध की मुख्य अवधारणा को दर्शाता है। इसमें आधुनिकीकरण, पारंपरिक ज्ञान, लोकसंस्कृति और सामुदायिक पहचान के बीच संभावित संबंधों को प्रदर्शित किया गया है।

5. चर्चा एवं निष्कर्ष

5.1 चर्चा

भोटिया जनजाति की लोकसंस्कृति, पारंपरिक ज्ञान और सामुदायिक पहचान का अध्ययन हिमालयी समाज में सातत्य तथा परिवर्तन को समझने का अवसर प्रदान करता है। हूण का अध्ययन बताता है कि भोटिया समुदाय की पारंपरिक जीवन-व्यवस्था को मौसमी आवागमन, पर्यावरणीय परिस्थितियों और आजीविका के संदर्भ में समझना आवश्यक है। आधुनिकता के प्रभावों के बावजूद सांस्कृतिक मूल्यों और जीवन-पद्धतियों की निरंतरता पर भी ध्यान देना चाहिए।

पारंपरिक ज्ञान का महत्त्व केवल सांस्कृतिक विरासत तक सीमित नहीं है। स्थानीय पर्यावरण के बारे में अनुभव, पशुपालन की विधियाँ, खाद्य संसाधनों का उपयोग तथा हस्तशिल्प से जुड़ा कौशल समुदाय के जीवन और आजीविका में योगदान दे सकते हैं। फारुकी और नौटियाल ने भोटिया पशुपालकों के पारंपरिक ज्ञान एवं प्रथाओं के दस्तावेजीकरण और उनके आर्थिक उपयोग को बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया है।

सांस्कृतिक संरक्षण की प्रक्रिया में महिलाओं और बुजुर्गों की भूमिका का अध्ययन विशेष महत्त्व रखता है। पारंपरिक भोजन, वस्त्र निर्माण, लोकगीत और मौखिक कथाओं का ज्ञान कई बार घरेलू तथा सामुदायिक गतिविधियों के माध्यम से आगे बढ़ता है। इसलिए संरक्षण की योजनाओं में केवल औपचारिक संस्थाओं के बजाय स्थानीय ज्ञानधारकों को भी सहभागी बनाना आवश्यक है। इसी प्रकार, युवा पीढ़ी को केवल परंपरा से दूर जाने वाले समूह के रूप में देखना उचित नहीं होगा। शिक्षा, डिजिटल माध्यमों और नए रोजगारों से जुड़ाव के साथ युवा अपने समुदाय की सांस्कृतिक विरासत को नए स्वरूपों में प्रस्तुत भी कर सकते हैं। इस संभावना की जाँच के लिए युवाओं के वास्तविक अनुभव, सांस्कृतिक गतिविधियों में उनकी भागीदारी और स्थानीय भाषा के प्रयोग से संबंधित प्रमाण जुटाने होंगे।

सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण समुदाय की सहमति और अधिकारों पर आधारित होना चाहिए। लोककथाओं, पारंपरिक ज्ञान तथा सांस्कृतिक अभिलेखों को दर्ज करते समय यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि समुदाय के संवेदनशील ज्ञान का अनुचित व्यावसायिक उपयोग न हो। दस्तावेजीकरण को जीवंत परंपराओं, आजीविका और स्थानीय निर्णय-प्रक्रियाओं से जोड़ना अधिक उपयोगी हो सकता है।

5.2 निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध-पत्र भोटिया जनजाति की लोकसंस्कृति, पारंपरिक ज्ञान और सामुदायिक पहचान के अध्ययन के लिए एक समेकित वैचारिक एवं पद्धतिगत आधार प्रस्तुत करता है। उपलब्ध साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि समुदाय के जीवन को समझने में पर्यावरण, मौसमी आवागमन, पारंपरिक आजीविका और सांस्कृतिक निरंतरता के बीच संबंधों को ध्यान में रखना आवश्यक है। अध्ययन की प्रस्तावित परिकल्पनाओं की पुष्टि या अस्वीकृति वास्तविक क्षेत्रीय अनुसंधान के बाद ही की जा सकती है। इसलिए इस चरण पर यह निष्कर्ष देना उचित नहीं होगा कि किसी विशेष परंपरा का निश्चित रूप से लोप हो गया है या आधुनिकता ने सभी समुदाय-सदस्यों को समान रूप से प्रभावित किया है।

6. संदर्भ

1. अप्पादुरई ए. आधुनिकता का व्यापक परिप्रेक्ष्य: वैश्विक सांस्कृतिक प्रवाह के आयाम। मिनीयापोलिस: यूनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा प्रेस; 1996।

2. एटकिंसन ईटी. हिमालयी गजेटियर। इलाहाबाद: उत्तर-पश्चिमी प्रांतों का सरकारी मुद्रणालय; 1882।
3. बार्थ एफ, संपादक। जातीय समूह और उनकी सीमाएँ: सांस्कृतिक अंतर का सामाजिक संगठन। बोस्टन: लिटिल, ब्राउन एंड कंपनी; 1969।
4. बेरेमैन जीडी. हिमालय के हिंदू: उत्तर भारतीय गाँव में जाति और संस्कृति। बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस; 1963।
5. बोरदियू पी. व्यवहार के सिद्धांत की रूपरेखा। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस; 1977।
6. ब्राउन वी, क्लार्क वी. मनोविज्ञान में विषयगत विश्लेषण का उपयोग। कालिटेक्टिव रिसर्च इन साइकोलॉजी. 2006;3(2):77-101।
7. चामलेगी एम, बिष्ट ए. उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले के मुनस्यारी क्षेत्र के भोटिया जनजातीय समुदाय के पारंपरिक खाद्य पदार्थ एवं पेय। पंतनगर जर्नल ऑफ रिसर्च. 2024;22(3)। लेख के मूल शीर्षक और पृष्ठ-संख्या का सत्यापन आवश्यक है।
8. क्रेसवेल जेडब्ल्यू, क्रेसवेल जेडडी. अनुसंधान अभिकल्प: गुणात्मक, मात्रात्मक और मिश्रित विधियों का दृष्टिकोण। पाँचवाँ संस्करण। लॉस एंजलिस: सेज प्रकाशन; 2018।
9. एरिक्सन टीएच. जातीयता और राष्ट्रवाद: मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण। तीसरा संस्करण। लंदन: प्लूटो प्रेस; 2010।
10. भारत सरकार. अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006। नई दिल्ली: भारत सरकार; 2006।
11. भारत सरकार, भारत के महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त का कार्यालय. भारत की जनगणना 2011: जिला जनगणना पुस्तिका, पिथौरागढ़, उत्तराखंड। नई दिल्ली: भारत सरकार; 2011।
12. भारत सरकार, जनजातीय कार्य मंत्रालय. वार्षिक प्रतिवेदन 2022-2023। नई दिल्ली: जनजातीय कार्य मंत्रालय; 2023।
13. हूण वी. चलायमान जीवन: कुमाऊँ हिमालय के भोटिया समुदाय का अध्ययन। नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स; 1996।
14. कोठारी सीआर. अनुसंधान पद्धति: विधियाँ एवं तकनीकें। दूसरा संशोधित संस्करण। नई दिल्ली: न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स; 2004।
15. मलिनोव्स्की बी. पश्चिमी प्रशांत महासागर के नाविक। लंदन: रूटलेज एवं कीगन पॉल; 1922।
16. मीड एम. संस्कृति और प्रतिबद्धता: पीढ़ियों के बीच संबंधों का अध्ययन। न्यूयॉर्क: नेचुरल हिस्ट्री प्रेस; 1970।
17. नांदा एस, वाम्रस आरएल. सांस्कृतिक मानवविज्ञान। बोस्टन: सेनगेज लर्निंग; 2019। प्रयुक्त संस्करण का प्रकाशन-विवरण जाँचें।

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.